राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ ।
गुरु के सम हरि को न निहारूँ

हरि ने जन्म दियो जग माहीं
गुरु ने आवागमन छुटाहीं

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ ।
गुरु के सम हरि को न निहारूँ....

हरि ने पांच चोर दिये साथा
गुरु ने लइ लुटाय अनाथा

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ ।
गुरु के सम हरि को न निहारूँ....

हरि ने कुटुंब जाल में गेरी
गुरु ने काटी ममता मेरी